भारत में आस्ति गुणवत्ता की चुनौती : लक्षण और निदान*

एस.एस. मूंदड़ा

श्री रशेष शाह, अध्यक्ष और सीईओ-एडलविस समूह; वित्त बिरादरी के सदस्यगण, महासभा के प्रतिनिधिगण, देवियो और सज्जनो! आज की सुबह मेरा यहां आना वस्तुतः मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है। मैं अपने संबोधन में प्राथमिक रूप से कुछ ऐसे समकालीन मुद्दों पर फोकस करना चाहूंगा जो हमारे बैंकिंग क्षेत्र के इर्द-गिर्द घूमते हैं जो समाचार कक्षों, न्यायालयों, बोर्ड रूम तथा ड्राइंग रूम आदि में बढ़-चढ़कर उठते रहे हैं। मैं उन बैंकरों तथा प्रवर्तकों की ओर इशारा कर रहा हूं जिनकी निंदा पीड़ित एवं कुल-कलंक के बीच अंतर किए बिना ज़ोर-शोर से की गई है। यह बैंकों या प्रवर्तकों का पक्ष लेकर बैट करने का प्रयास नहीं है बल्कि सही चीज को सही ढंग से देखने का प्रयास मात्र है तथा परिस्थिति को उद्देश्यपरक रूप से मूल्यांकन करने को प्रोत्साहित करना है। लेकिन इससे पहले कि मैं उपर्युक्त विषय पर बात करूं आर्थिक मोर्चे पर कुछ अच्छी बातों से शुरुआत करना चाहूंगा।

2. विश्व में बनी हुई लगातार मंदी के दौरान घरेलू विकास की संभावनाएं 2016-17 में सकारात्मक बनी हुई हैं जिसकी मुख्य वजह विभिन्न प्रकार के संरचनागत सुधार, सामान्य मानसून की उम्मीद, सीपीआई मुद्रास्फीति के सहज होने तथा निजी उपभोग का बढ़ना रहा है। ग्रामीण और बुनियादी सुविधा क्षेत्र पर फोकस तथा सब्सिडी व्यय में कमी से राजकोष की स्थिति में मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार से सुधार हुआ है। पिछले दिनों इस्पात की कीमतें अंतरराष्ट्रीय एवं घरेलू दोनों स्तरों पर मज़बूत हुई हैं, विशेष रूप से न्यूनतम आयात मूल्य के लागू किए जाने से। सीमेंट और आटो क्षेत्र में भी वृद्धि के संकेत दिखाई दिए हैं जबकि मात्रा के हिसाब से तेल की मांग में तकरीबन 11 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जिससे देश में आर्थिक गतिविधियों में तेजी आने के संकेत मिले हैं।

3. अब मैं मुख्य मुद्दे पर आता हूं जिसके बारे में मैं आज की सुबह फोकस करना चाहता हूं। मैं जो बोलने जा रहा हूं वह आपको चिकित्सा संबंधी किसी पांडुलिपि जैसा लग सकता है लेकिन इस कहानी को इसी तरह से सबसे अंदाज़ में बताया जा सकता है। मैं बीमारी के ऐसे लक्षण के बारे में बताउंगा जो जानलेवा नृबीमारी में बदल जाने के संकेत देते हैं।

लक्षण

4. बैंकिंग प्रणाली में दबाव के बढ़ने के संकेत वर्ष 2012 के प्रारंभ से ही काफी हद तक दिखाई देने लगे थे। बैंकिंग प्रणाली की दबावग्रस्त आस्तियां (जीएनपीए+पुनर्रचित मानक आस्तियां+बट्टे खाते डाली गई राशियां) मार्च 2012 के अंत में कुल मिलाकर 9.8 प्रतिशत थीं जो तेजी से बढ़कर दिसंबर 2015 के अंत तक 14.5 प्रतिशत हो गईं। इसी अवधि में सरकारी क्षेत्र के बैंकों की दबावग्रस्त आस्तियां 11.0 प्रतिशत से बढ़कर 17.7 प्रतिशत हो गईं।

5. इसी प्रकार अनुसूचित वणिज्य बैंकों के निवल लाभ की वृद्धि में 2011-12 से ही गिरावट की प्रवृत्ति रही थी और 2013-14 में ऋणात्मक हो गई थी। इस गिरावट का प्राथमिक कारण यह था कि बैंकों ने 2012-14 के दौरान डूबते हुए ऋणों के लिए अधिक प्रावधान किया था। जिसके कारण उनकी आस्तियों एवं इक्विटी के प्रतिफल

अनुसूचित वाणिज्य बैंकों की आस्तियों और इक्विटी पर प्रतिफल: बैंक समूहवार

(प्रतिशत)

क्र.सं.	बैंक समूह/वर्ष	आस्तियों पर प्रतिफल			इक्विटी पर प्रतिफल		
		2012-13	2013-14	2014-15	2012-13	2013-14	2014-15
1	सरकारी क्षेत्र के बैंक	0.80	0.50	0.46	13.24	8.48	7.76
2	निजी क्षेत्र के बैंक	1.63	1.65	1.68	16.46	16.22	15.74
3	विदेशी बैंक	1.92	1.54	1.87	11.53	9.03	10.25
	सभी अनुसूचित वाणिज्य बैंक	1.04	0.81	0.81	13.84	10.69	10.42

टिप्पणी : आस्तियों पर प्रतिफल = निवल लभ/औसत कुल आस्तियां
इक्विटी पर प्रतिफल = निवल लभ/औसत कुल इक्विटी

* श्री एस. एस. मूंदड़ा, उपगवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा 28 अप्रैल 2016 को मुंबई में आयोजित एडलवीस क्रेडिट कन्क्लेव में दिया शुरुआती संबोधन भाषण।

पर प्रभाव पड़ा। इस अवधि के दौरान बैंकों के स्प्रेड तथा निवल ब्याज मार्जिन में भी गिरावट रही।

निदान-परीक्षण या मूल कारण का विश्लेषण

6. जैसाकि चिकित्सा में अगला चरण तशखीस का होता है जिसमें यह पता किया जाता है कि बीमारी का मूल कारण क्या है। आस्ति की गुणवत्ता संबंधी समस्या सिद्धांततः चार कारणों में से किसी एक कारण से हो सकती हैः

ए. पर्यावरणीय कारक

2008 में आए वित्तीय संकट से विश्व की अर्थव्यवस्था में जो मंदी पसरी है वह भारत में आस्ति गुणवत्ता की समस्या का एक प्रमुख कारण हो सकती है। इसके साथ ही अन्य बाहरी कारक भी हैं जैसे वस्तुओं की कीमतों में गिरावट, चीन द्वारा माल भर देना आदि जिससे प्रतिस्पर्धा कम हो गई और फलस्वरूप क्षमताओं का उपयोग थम सा गया तथा नकदी प्रवाह की समस्या उत्पन्न हो गई। स्थिति और खराब तब हो गई जब देश में नीतिगत गतिरोध पैदा हो गया। देश में अनेक बड़ी-बड़ी परियोजनाएं रुक गईं क्योंकि उन्हें पर्यावरणीय स्वीकृति नहीं मिल पाई, कोयले के ब्लाक आबंटन रद्द हो गए, ईंधन की आपूर्ति व्यवस्था चरमराती चली गई, स्थानीय वोरोध उठे आदि। ऐसी स्थिति में आप इन प्रवर्तकों या उधार देने वाले बैंकों किस खाने में रखेंगे? क्या आप ऐसे प्रवर्तकों को इरादतन चूककर्ता कहेंगे या उधार देने वालों की नीयत की खराबी कहेंगे?

बी. कारपोरेट असावधानी

प्रणाली में आस्तियों की खराब गुणवत्ता का दूसरा महत्वपूर्ण कारण कारपोरेट की असावधानी रही है। ऐसी कई बातें जहां कारपोरेट असफल रहे हैं वे इस प्रकार हैंः

- अत्यधिक लीवरेजः कर्ज ही कर्ज, कोई इक्विटी नहीं; कारपोरेट्स की ढकी-छुपी संरचना के कारण बैंकों द्वारा मूल्यांकन बाधित हुआ।
- अति संवृद्धि की सनक : क्षमता की अतिशयता। असंबद्ध आबंटन। उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के केंद्रीय बैंकों द्वारा अपनाई गई अति समंजनकारी मौद्रिक नीति के कारण उत्पन्न चलनिधि ने भी बेतरतीब प्रोत्साहनों को पैदा किया।
- लाभ के पीछे भागना, उदाहरण के लिए असुरक्षित विदेशी मुद्रा एकस्पोजर में छुपे हुए जोखिमों की अनदेखी करना।

सी. कारपोरेटगत अपराध

सभी प्रवर्तकों/उधारकर्ताओं को स्थिति की स्पष्ट समझ नहीं हो पा रही थी और उनमें से कुछ ने गलत साधनों का उपयोग किया और व्यवस्था से बाहर हो गए। वे बैंकों की बहियों में इरादतन चूककर्ता के नाम से दर्ज हैं जो अपने कर्ज की जिम्मेदारी को नहीं निभाना चाहते थे जबकि उनके पास अदायगी की क्षमता थी। कुछ प्रवर्तकों ने जिस उद्देश्य के लिए धन लिया था उसमें न लगाकर किसी अन्य कार्य में लगा दिया था। ऐसे भी अवसर थे जिनमें उधारकर्ताओं ने उधार लिए गए धन का उपयोग अपने निजी कार्य के लिए किया और किसी उत्पादक आस्ति का सृजन नहीं किया। कुछ प्रवर्तकों ने चल स्थिर आस्तियों या अचल संपत्तियों को, जिनकी जमानत पर ऋण प्राप्त किए गए थे, उधारदाता को बताए बिना बेच दिया। फलस्वरूप ऐसे मामलों में की गई चूक इरादतन, जानबूझकर एवं साध कर की गई थी इसलिए इसे जानबूझकर की गई चूक माना जाएगा। ऐसे ही प्रवर्तकों को बाहर करने की तथा तेजी से न्याय प्रक्रिया में लाने की आवश्यकता है।

डी. बैंकों की नाकामी

ऐसा नहीं है कि केवल कारपोरेट्स ही प्रणाली को तकलीफ पहुंचा रहे हैं। अनेक मामलों में, बैंकरों ने भी उन परियोजनाओं के बारे में यथोचित सावधानी नहीं बरती है जिनके लिए वे वित्त प्रदान कर रहे हैं। बैंकों ने कुछ सामान्य स्वरूप की गलतियां की हैं जो इस प्रकार हैंः

- गवर्नेंस की कमी;
- ऋण का खराब मूल्यांकन, विशेष रूप से इन्फ्रा के वित्तपोषण में जैसे महामार्ग जिनमेंसंविदाएं 'सोने से कलई' की गई थीं, विद्युत परियोजनाएं जिनमें एफएसए की त्रुटियां थीं, पासथ्रू-व्यवस्था का अभाव था, भुगतान बंद कर देने का प्रावधान नहीं था आदि।
- कमजोर जोखिम प्रबंधन,
- वृद्धि कर लेने का उतावलापन,
- जैसा करना वैसा न करना

7. बैंकों और कारपोरेट्स ने जो गलतियां कीं, चाहे वे प्रासंगिक रही हों या जानबूझकर की गई हों, उनके कारण बैंकिंग प्रणाली में अनर्जक आस्तियों का अंबार लग गया। जहां बैंकों के लिए यह ज़रूरी था कि वे यह देखते कि एक ही क्षेत्र में ऋण के जमा हो जाने का जोखिम तो नहीं है, विशेष रूप से जिस क्षेत्र में आवश्यकता से अधिक संवृद्धि हो गई है, वहीं कारपोरेट्स को उभरते हुए बाज़ार के डायनामिक्स का मूल्यांकन करने में दूरदृष्टि से काम लेना चाहिए था। बैंकिंग समुदाय में आमतौर पर उनकी बहियों में दबाव दिखाने के प्रति असहमति है। यह नज़रिया इस बुनियाद पर बना है कि एनपीए तो वर्जित है इसलिए कोई भी ऐसे खातों को उधार नहीं देना चाहेगा। हालांकि, इस दृष्टिकोण के प्रति वास्तविक जीवन की कुछ सच्चाइयां हैं, यहां मेरा सवाल यह है कि क्या बीमार को दवा नहीं दी जानी चाहिए? कभी-कभी अज्ञात का भी बहुत ज़्यादा डर होता है। यदि हम दबावग्रस्त खातों की समस्याओं को दूर नहीं करेंगे तो उसके अलावा हमारे पास विकल्प ही क्या है? कंपनी की स्थिति और भी खराब होती जाएगी, बैंक की बहियों को प्रभावित करेगी और उसकी अधिक जांच करने की ज़रूरत पड़ेगी। यह बात जानने के बाद यह अंतर करना तुरंत ज़रूरी है कि क्या रोग इलाज योग्य है या लाइलाज है और यदि इलाज योग्य है तो दवा देनी होगी या शल्यक्रिया करनी होगी।

शल्यक्रिया से पूर्व की प्रक्रिया

8. जैसाकि किसी भी शल्यक्रिया से पहले कुछ दवाइयां लेनी पड़ती हैं या उसके पूर्व की कुछ प्रक्रिया होती है, उसी प्रकार यहां भी भारतीय रिज़र्व बैंक ने भी कुछ नुस्खे दिए हैं। इसकी शुरुआत बड़े ऋण डाटा के संबंध में केंद्रीय सूचना रिपाजिटरी(सीआरआईएलसी) के सृजन से हुई है जिसमें वित्तीय प्रणाली के विभिन्न समूहों के कर्ज के स्तर से संबंधित जानकारी संग्रहीत होती है। इसके बाद 'वित्तीय दबाव की शीघ्र पहचान' के संबंध में दिशानिर्देश जारी किए गए हैं। समाधान देने के लिए तत्परतापूर्वक उपाय और उधारदाताओं के लिए यथोचित वसूली; रिज़र्व बैंक द्वारा अर्थव्यवस्था में दबावग्रस्त आस्तियों को पुनः सक्रिय बनाने के लिए दी गई संरचना, जिसका मकसद यह है कि कारपोरेट्स और वित्तीय संस्थाओं के दबाव को दूर करने के लिए प्रणाली की क्षमता को बेहतर बनाया जाए। उधारकर्ताओं का संयुक्त फोरम(जेएलएफ) बनाने, सुधारात्मक कार्ययोजना(सीएपी), परियोजना ऋणों को पुनर्वित्त, बैंकों द्वारा एनपीए की बिक्री संबंधी विस्तृत दिशानिर्देश एवं अन्य विनियमामकीय उपाय बैंकों को जारी किए गए हैं ताकि समस्यामूलक मामलों की शीघ्र पहचान के लिए तत्परता से क़दम उठाए जा सकें, जिन खातों को फायदेमंद माना जाए उनकी समय पर पुनः रचना करना तथा नुकसानदेह खातों की वसूली या बिक्री करना। 5/25 योजना तथा रणनीतिक ऋण पुनर्र्चना योजना को भी इसी दृष्टि से प्रारंभ किया गया ताकि दबाव में कमी आए और उनका शीघ्र समाधान किया जा सके।

शल्यक्रिया की प्रक्रिया

9. शल्यक्रिया के पूर्व की प्रक्रिया पूरी कर लेने के बाद भारतीय रिज़र्व बैंक ने बैंकों में आस्ति गुणवत्ता समीक्षा (एक्यूआर) के रूप में शल्यक्रिया प्रारंभ की है। इसका उद्देश्य यह पता करना है कि दर्द कहां से उठ रहा है और दबाव का बिंदु कहां है ताकि उपचारात्मक कार्रवाई की जा सके। भारत सरकार इस बात के लिए बधाई की पात्र है कि उसने पूरा समर्थन देते हुए कमज़ोर सरकारी क्षेत्र के बैंकों को पूंजी दी है/ पूंजी देने की वचनबद्धता दिखाई है।

10. क्या यह शल्यक्रिया सफल है? क्या इसका अपेक्षित प्रभाव पडेगा? मेरा मानना है कि बिलकुल पड़ेगा। विभिन्न खिलाड़ियों से हुई मेरी बातचीत से मुझे अंदाज़ा लगा कि इसका काफी सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, यहां तक कि टियर II और टियर III श्रेणी के शहरों में भी। प्रवर्तकों को यह एहसास हो गया है कि यदि वे ऋण संबंधी अनुशासन का पालन नहीं करते हैं तो बैंक बुरी तरह उनके पीछे पड़ने वाले हैं। लेकिन कुछ सशंकित लोग भी हैं जो यह कहते हैं कि क्या यह रिज़र्व बैंक के लिए ऐसी पहल करने का सही समय था जब अर्थव्यवस्था का विकास धीमी गति से हो रहा हो। दिलचस्प बात यह है कि इनमें से कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने पहले भारतीय रिज़र्व बैंक की आलोचना इस बात के लिए की थी कि रिज़र्व बैंक ने चीजों को घटित होने दिया और बैंकों को अत्यधिक छूट दे दी थी। संक्षेप में कहें तो इन समस्त कार्यों का परिणाम यह है कि इससे 'देश में ऋण अनुशासन बेहतर' हुआ है।

बिना मांगे सलाह

11. आपको यह अनुभव होगा कि जब आप बीमार पड़ते हैं तब आपको कई प्रकार की सलाह मिलती हैं। हर दूसरे व्यक्ति का अलग नज़रिया होता है और उसके लिए अलग-अलग इलाज होता है, साथ ही उलटी-सीधी थेरेपी भी बताते हैं। यहां भी स्थिति कुछ भिन्न नहीं है। ज्यों ही भारतीय रिज़र्व बैंक ने बैंकिंग प्रणाली की बीमारी का सफाया करने के लिए क़दम उठाए हर कोई मामले में सबसे ज्यादा बुद्धिमान बनने की कोशिश करने लगे और अपने-अपने नुस्खे देने लगे। कुछ लोग रोगी को दोष दे रहे हैं तो कुछ डाक्टर को और अन्य ऐसे भी हैं जो प्रक्रिया को दोष दे रहे हैं। बैंकों की ऋण मुल्यांकन प्रक्रिया, संपार्श्विक की उपलब्धता, निजी गारंटी, पुनर्रचना, स्टाफ का दायित्व आदि-आदि के लिए तथाकथित एक से बढ़कर एक विचार

उठने लगे हैं। यदि सभी नुस्खों पर अमल कर लिया जाए यह बहुत सफल शल्यक्रया होगी किंतु रोगी की मौत हो चुकी होगी। अन्य शब्दों में उधार देने की प्रक्रिया ठप्प पड़ जाएगी।

शल्यक्रिया के बाद की देखभाल

12. आपरेशन के बाद सभी मामलों में पुनः स्वस्थ होने की अपेक्षा होती है, ठीक उसी प्रकार बैंकिंग प्रणाली में भी है। प्रणाली में थोड़ा रुककर देखने की ज़रूरत है कि कहां क्या गलत हुआ है। बैंकों को अपनी जीवन शैली में जो बदलाव लाना है वह है ऋण के जोखिमों पर ध्यान देना और जिसे वे जानते-समझते हैं और जो उनकी जोखिम उठाने की भूख की सीमा में आते हैं। इतना ही नहीं, उन्हें इस बात से परहेज़ करना होगा कि वे भी वही खाएं जो उनके पड़ोसी खा रहे हैं। आसान शब्दों में कहें तो बोर्ड और शीर्ष प्रबंधतंत्र को बैंक को इस प्रकार मोड़ना होगा कि उनके पास एक तीव्र ऋण मूल्यांकन प्रक्रिया हो, एक विविधीकृत पोर्टफोलियो एवं बेहतर जोखिम गवर्नेंस हो। जबकि दूसरी ओर उधारकर्ता के लिए बदली हुई जीवन-शैली का आशय है कि उसे ऐसा मार्ग अपनाना होगा जो मैराथन धावक जैसा हो न कि थोड़ी दूर तक दौड़ने वाला अल्प धावक। उद्यम चलाना एक दौड़ लगाकर रुक जाने जैसा नहीं है। एक मैराथन धावक की तरह सदैव बाहरी वातावरण के प्रति चौकन्ना रहना चाहिए और स्वयं को थकाए बिना एक सधी हुई गति से दौड़ते रहना चाहिए।

उपचार हेतु उपाय

13. एक्यूआर के बाद भी चुनौतियां बनी रहती हैं। इसके लिए संभावित समाधान क्या है? यह बात सामान्य हो गई है कि बड़ी संख्या में कारपोरेट्स की स्थिति अति लीवरेज की है और उनकी कर्ज चुकाने की हालत पतली हो चुकी है। ऐसी अनेक परियोजनाएं हैं जिन्हें दुबारा पूंजी की ज़रूरत है, नये प्रबंधन और नये प्रवर्तकों की आवश्यकता है। बैंक अनेक कारणों से उन खातों के प्रति चौकन्ने हो गए हैं जो दबावग्रस्त हैं। एक उद्यम को फायदे में चलाना तब तक बहुत मुश्किल है जब तक कर्ज के स्तर को कम नहीं किया जाता, इसलिए पहला क़दम यह होना चाहिए कि कर्ज को सहने योग्य स्तर तक लाया जाना चाहिए। इसके लिए हो सकता है कि उधारदाता को ऋण का एक हिस्सा माफ करना पड़ सकता है और/अथवा उन्हें इक्विटी में बदलकर तथा नये प्रवर्तक लाकर उद्यम को चलाना पड़ सकता है। लेकिन, इस प्रक्रिया में समय लग सकता है, इसलिए इस बीच बैंक को चाहिए कि ओ एंड एम एजेंट की नियुक्ति करे जो उद्यम के कार्यों को संचालित करे।

14. कुछ मामलों में, कतिपय शेष बचे हुए निवेशों के लिए या कार्यशील पूंजी के लिए अतिरिक्त धन की आवश्यकता हो सकती है। जेएलएफ के कार्य में सबसे बड़ी रुकावट संघीय व्यवस्था के सदस्यों के बीच आपसी सहमति बनने में धीमापन रहा है, इसलिए कार्ययोजना को लागू करने में अनिवार्य रूप से विलंब हो रहा है। इस विलंब से जेएलएफ व्यवस्था की स्थापना का उद्देश्य विफल हो रहा है। कुछ लोगों का विचार है कि निवेश निधि बनाई जाए जो अंतिम उधारदाता के रूप में इस्तेमाल की जाएगी। निवेश निधि से धन छोटे उद्यम को दिया जा सकता है जो उसे वापस लाभ की उस हालत में लाएगा जिस स्तर पर बैंक फर्म में अपनी इक्विटी को फायदेमंद तरीके से डायल्यूट कर सकता है। प्रश्न यह है कि इस निवेश निधि को पैसा कौन देगा? मेरे विचार से इस क्षेत्र के अनेक खिलाड़ियों का एक संयुक्त प्रयास होना चाहिए। इतना ही नहीं, केवल वित्तीय सहायता प्रदान करना ही शायद पर्याप्त नहीं होगा। इस निधि में यह भी क्षमता होनी चाहिए कि वह संबंधित परियोजनाओं को प्रबंधन संबंधी सहायता भी प्रदान कर सके।

समापन

15. मैं अपनी बात यह कहते हुए समाप्त करना चाहता हूं कि विश्व की अर्थव्यवस्था एक मुश्किल दौर से गुज़र रही है और उससे पड़ने वाले प्रभाव बने हुए हैं। इस परिदृश्य में और विश्व की अर्थव्यवस्था से जुड़े होने के नाते आस्ति की गुणवत्ता में सामान्य गिरावट कोई अप्रत्याशित सी बात नहीं है। लेकिन जिस सीमा तक गिरावट हुई है उसे बचाया जा सकता था। शायद इसका कारण यह कि न तो बैंकों ने और न ही कार्पोरेट्स ने गुणवत्ता बनाए रखने की रोकथाम की। मुझे उम्मीद है कि तकलीफ सहन कर लेने के बाद हरेक को अक़्ल आएगी और परिस्थिति की दृष्टि से समय-समय पर जांच करवाएंगे ताकि वे स्वस्थ बने रहें और लंबे समय तक स्थायी रहें।

16. जो उद्यम अस्थायी रूप से दबाव में हैं उन्हें उबारने के लिए हमें हर साधन का प्रयोग करना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि उत्पादक उद्यम अंततः बीमार न पड़ जाएं। इसके लिए ऐसे सप्लायर्स हैं जो छोटी-छोटी इकाइयों में हैं या एमएसएमई और इसके अलावा कामगार हैं, उनके परिवार के लोग हैं जिनका इस्तेमाल किया जा सकता है। प्रत्येक उद्यम कई जीवन को सहारा प्रदान करता है। किसी कारखाना या कंपनी के आसपास पूरी आर्थिक प्रणाली होती है। किसी भी चलती हुई इकाई को बंद करने से कई ज़िंदगियां प्रभावित होंगी और मेरे विचार से यह सामूहिक रूप से सामाजिक जिम्मेदारी है कि हम कोशिश करें कि उत्पादक उद्यम ठप्प न पड़ने पाएं।

मैं एडलविस प्रबंधन को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने आज मुझे इस ऋण-महासभा में आमंत्रित किया और मैं इसमें होने वाले विचार-विमर्श की सफलता की कामना करता हूं।

धन्यवाद।